



बिंदिया

मेरी दोस्त, मेरी हमसफ़र

कमला भसीन

सुनीता (धर) और गीता (नम्बीशन) ने 'जागोरी' की पत्रिका 'हम सबला' के लिये मुझे बिंदिया के बारे में लिखने को कहा। उनका ये सुझाव मेरे लिये बहुत ही मददगार रहा। वो सारी यादें, उथल-पुथल जो बिंदिया के जाने के बाद मेरे अन्दर दहाड़ें सी मार रही थीं, निकलकर बाहर आ पाईं। 'जागोरी ग्रामीण' के तारा केन्द्र के सौन्दर्य और खामोशी के बीच बैठ कर मैंने यह सब लिखा। लिखते वक्त दिल बेहद उदास था, आंखें कभी नम थीं, कभी गीली और कभी उन में बाद आती थी और मैं कलम छोड़कर अपने बेटे के पास बैठ जाती थी। मेरा 33 बरस का मूक बेटा सब समझता है और अपनी बड़ी-बड़ी खूबसूरत आंखों से प्यार और सुकून बरसाता है। उसने यही किया हर बार, जब मैं उदास और रोती हुई उसके पास गई।

बिंदिया (धापर) और मैं पहली बार कर मिले ये ठीक से याद नहीं है। लगता तो ऐसे है जैसे हमेशा से एक दूसरे को जानते थे और हमेशा जानेंगे। शायद 1986-87 में कभी मिले थे। मैंने ढूंढा था उसे, क्योंकि मुझे उसकी कला और प्रतिभा की ज़रूरत थी। मैं राजस्थान महिला विकास कार्यक्रम की 80-85 साधियों के एक लम्बे प्रशिक्षण से लौटी थी। उस प्रशिक्षण के लिये मैं लड़कियों और महिलाओं की स्थिति पर एक किताब का मसौदा बना कर ले गई थी। उस प्रशिक्षण में उस मसौदे को सबसे छोटे समूहों में पढ़ा,

उस पर चर्चा की और उस के बाद वह किताब तैयार हुई। उस किताब का नाम है "हमारी बेटियां इन्साफ़ की तलाश में"। इस किताब की साज सज्जा के लिये मैं किसी चित्रकार/रूपकार की खोज में थी। तब किसी ने मुझे बिंदिया का कुछ काम दिखाया और उसका अता-पता दिया। मैंने उसे सम्पर्क किया और तब शुरू हुआ लगभग तीस वर्ष लम्बा सफ़र, बिंदिया और मेरे साझे काम, दोस्ती और प्यार का सफ़र।

मुझ से दस साल छोटी थी/है बिंदिया। वह मुझ से पहले शरीर त्याग कर चल पड़ेगी कभी नहीं सोचा था। बड़े-बुजुर्ग पूरी जिंदगियां जी कर जाते हैं तो अपने दर्द को समझाया जा सकता है। मगर नज़दीकी व्यक्ति का असमय जाना जान ले लेता है, बहुत तड़पाता है, बहुत बड़े इम्तहान लेता है। मेरे बहुत सारे ऐसे इम्तहान हो चुके हैं। 2004 में मुझ से दो साल छोटा, जी-जान से प्यारा मेरा भाई, इट्ठू गया। 2006 में मेरी जान, मेरा भविष्य, 27 साल की मेरी बेटा मीतो गई। उसके जाने ने हिला रखा है मुझे। 2009 में मेरे मित्र और बिंदिया के जीवन-साथी, रिमंतु (कोठारी) गए। 2012 में मुझ से दो साल बड़ी मेरी बहन कुसुम चल बसी। 2013 में मेरी निहायत अजीज़ दोस्त सुनीला (अबयसेकेरा) गई। और अब बिंदिया। बहुत हैरान हूं आज कल मैं। समझ नहीं आ रहा कहां से ये सारी



जुदाईयां और गम सहने और जिन्दा रहने की ताकत आती है। शायद यही सच हो, कि परेशानियों और गमों के साथ-साथ उन्हें सहने की हिम्मत भी हमें दी जाती है।

कैंसर के साथ व्यारह बरस

व्यारह बरस कैंसर के साथ बिताने के बाद बिंदिया ने 18 अप्रैल, 2014 को अपना शरीर त्यागा। 2003 में सिर्फ 47 साल की थी वो जब कैंसर ने उसके शरीर में प्रवेश किया। मैं बिंदिया के साथ थी जब डॉ. ऐबी ने कहा कि उसे कैंसर है। बिंदिया, उसकी बेटी माओ (ताहिरा), उसका जीवन साथी रिमतु (कोठारी), मां प्रिमिला जी (लूम्बा), बहन आन्या (लूम्बा) और हम उस के बहुत सारे दोस्त, यकीनन बहुत घबराये। वो भागदौड़, खोजबीन, परेशानियां, जो कैंसर जैसी बीमारी के साथ शुरू हो जाती हैं, शुरू हुईं। सारी जांच पड़ताल के बाद यह तय किया कि उसका इलाज सरकारी अस्पताल एम्स (AIIMS) में करवायेंगे। बिंदिया के नजदीकी दोस्त अन्शु (प्रकाश) वहां कुछ डॉक्टरों से परिचित थे, सो सफर कुछ आसान हो गया। कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर ललित ने बिंदिया का इलाज करना शुरू किया। व्यारह बरस तक उन्होंने ही इलाज किया। बिंदिया और हम सब डॉक्टर ललित की दक्षता, करुणा, इन्सानियत के कायल हो गये। जितनी सुविधाएं, संसाधन, क्षमता एम्स अस्पताल के पास हैं, उनसे कई गुना ज्यादा मरीज वहां आते हैं। वहां की भीड़ और मरीजों और उनको सम्भालने वालों की परेशानियों को देख कर रोंगटे खड़े होते हैं। वहां का प्रबन्धन करना, बिल्कुल आसान नहीं है। इन परिस्थितियों में अपनी इन्सानियत, करुणा, सबको बनाये रखना आसान नहीं है। मगर आज भी सरकारी अस्पतालों में डॉक्टर ललित जैसे व्यक्ति हैं जो इन्सानियत से हमारा भरोसा उठने नहीं देते। सरकारी अस्पतालों में और चाहे कितनी तकलीफें उठानी पड़ती हों, वहां



कम से कम यह खयाल तो नहीं कचोटता कि हमें लूटा जा रहा है, सिर्फ पैसा बनाने के लिये टैस्ट किये जा रहे हैं, मशीनों पर रखा जा रहा है।

बिंदिया की शल्य चिकित्सा और कीमोथैरेपी हुई। कुछ समय के लिये वो कैंसर मुक्त रही या कैंसर कहीं गहरे में छुप गया। वो स्वस्थ हुई, उसके खूबसूरत बाल वापिस आये, जीने की ताकत और तमन्ना लौटी। मगर 6-8 महीने बाद कैंसर भी लौट आया। फिर वही सिलसिला, अस्पताल के चक्कर, टैस्ट, दवाईयां, सुईयां, दर्द, सर्जरी, कीमोथैरेपी, जी का मचलना, धबराहट, बालों का गिरना, अन्तहीन परेशानियां और इन्तहान। व्यारह साल तक हर बरस ये इन्तहान आये। सच में यकीन नहीं होता कि बिंदिया और उसकी टीम ने कैसे ये सब किया।

परेशानियों और सहनशक्ति के बीच मुकाबला

शायद यह बिंदिया और उसके नजदीकी लोगों की हिम्मत, उम्मीद, दानिशमंदी, समझ बूझ थी कि इन तूफानों में भी हाहाकार का माहौल नहीं बना, हंगामाई हालात नहीं पनपने दिये। परेशानी को सहजता से लिया गया। कैसी कैसी परेशानियां आईं। इन व्यारह सालों के दौरान बिंदिया की अम्मा, प्रिमिला जी को भी कैंसर हुआ। मां बेटी एक ही समय एम्स के दो कमरों में इस बीमारी से जूझ रही थीं। दोनों ठीक हो कर घर लौटीं। सब ने उम्मीद का दामन पकड़े रखा।

इसी दौरान 2006 में मेरी बेटी मीतो, जो उस समय ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पीएचडी कर रही थी, और बिंदिया मौसी के भी बहुत करीब थी, गुजर गई। जिस रात ये भयानक खबर आई बिंदिया और मैं कमानी सभागार में एक नाटक देख रहे थे। दोनों हंसते हुये, नाटक पर चर्चा करते हुये पैदल मेरे घर आये और वहां मिल कर खाना खाने की योजना थी। घर आये तो देखा मेरे दोस्त

रितु, पोगी, रत्ना, (मेनन) और विद्याराव बैठे हुये थे मुझे बाहों में लेकर ये बताने कि मीतो चल बसी। उस ने आत्महत्या की। मीतो का दोस्त फोन पर मुझे सीधा इतना बड़ा धक्का नहीं देना चाहता था, सो उसने मेरे मित्रों को फोन किया और उन्हें कहा मुझे बताने को। मीतो को Depression की बीमारी थी, यह तो हमें पता था, मगर ऐसा भी हो सकता था, कभी नहीं सोचा था। मुझ पर, मेरे परिवार पर और मेरे और मीतो के तमाम चाहने वालों पर क्या गुज़री यहां लिखने की ज़रूरत नहीं है। बिंदिया, रिमतु, माओ इस दौरान मुझे सहारा देते रहे। मुझे याद है बिंदिया ने एक दिन मुझे बहुत दुखी होकर कहा था “एक तरफ़ मैं अपनी जिंदगी को बचाने की हर कोशिश कर रही हूँ और दूसरी तरफ़ मीतो ने खुद अपनी जिंदगी खत्म कर दी। क्या है यह सब?” यही हैं जिंदगी की अजीबोगरीब बातें जिन्हें समझना और जीना आसान नहीं है। स्वामोशी के अलावा मेरे पास इसका कोई जवाब नहीं था।

हम सब मिल कर जिंदगी के इन तूफ़ानी बाढ़ों से जूझते रहे, उनमें गोते खाते रहे। पानी अक्सर सर के ऊपर था, पर जिंदगी चलती रही। इन उतार-चढ़ावों में शायद हमारी दोस्तियों और काम ने हमें ज़िन्दा रखा, और हमारी दोस्तियां और गहराई। एक तूफ़ान थमता था, हम कुछ हिम्मत बटोर पाते थे कि बिंदिया का कैंसर फिर आ जाता था और फिर वही सिलसिला। कैंसर एक ऐसी बीमारी है जिससे निपटने के लिये पूरी टीम चाहिये होती है। बिंदिया किस्मत वाली थी कि उसकी एक ज़बरदस्त टीम थी। पूरा परिवार था, बहुत सारे दोस्त थे। रिमतु ने भी बहुत प्यार और लगन से देख-रेख की बिंदिया की।

कैंसर के आने के बाद बिंदिया ने अपने भोजन और जीने के तरीके को बहुत बदला। ऐलोपैथी के साथ-साथ कई और तरह के इलाज भी करवाये। होम्योपैथी, आयुर्वेद, तिब्बती इलाज, प्राकृतिक चिकित्सा, सब कुछ। प्राकृतिक चिकित्सा के लिये बिंदिया और रिमतु केरल जा कर एक छोटे प्राकृतिक



चिकित्सालय में रहे। जब रिमतु को काम के लिये बाहर जाना था, मैं केरल गई और 10-12 दिन बिंदिया के साथ रही। वहां हम दोनों घूमने जाते थे, संगीत सुनते थे, हंसते थे, खूब बातें करते थे। उड़ दो महीने वहां रहकर बिंदिया दिल्ली लौटी। मगर कुछ समय बाद कैंसर फिर लौटा। हर साल शरीर कुछ ज़्यादा कमजोर था, कैंसर कुछ ज़्यादा शिद्धत से आता था, हम सब कुछ और बूढ़े हो रहे थे, मगर हिम्मत और उम्मीद के हाथ पकड़े रहे। वैसे, हमारे पास और चारा भी क्या था।

न तूफ़ान थमे, न हमने हिम्मत हारी

2009 में बिन मौसम और बिना चेतावनी के एक और तूफ़ान आया, बिंदिया और हम सब की जिंदगी में। अच्छे खासे, स्वस्थ रिमतु दिल्ली में एक बैठक में बोल रहे थे कि बेहोश होकर गिर गये। दिल के बाहर की धमती में छेद हो गया था। इस के दो दिन पहले ही रिमतु और मैं पीपल्स पार्क की एक दक्षिण एशियाई बैठक में हिस्सा लेकर नेपाल से लौटे थे। रिमतु बिल्कुल स्वस्थ और मज़े में थे, ठीक थे। दिल का आप्रेशन किया गया मगर रिमतु नहीं बचे। बिंदिया, उसके परिवार और दोस्तों को अब रिमतु के अकस्मात चले जाने के दर्द से निपटना था। ये भी किया बिंदिया बीबी ने। कैसे किया, मुझे नहीं पता, पर किया और गरिमा के साथ सब कुछ किया। रिमतु के गुज़रने के बाद बिंदिया की बेटा माओ और दामाद

अमित की जिम्मेदारियां बढ़ गईं। वे इंग्लैण्ड से लौटे और बिंदिया के साथ रहने लगे। कैंसर दबता रहा, उभरता रहा, कभी किसी अंग में, कभी किसी अंग में। 2012 में उसने मस्तिष्क में उखा डाला। मस्तिष्क की सर्जरी हुई, बिंदिया फिर ठीक होकर घर लौटी। इसी वक्त माओ की बेटी नूर पैदा हुई और परिवार में नूर छाया। बिंदिया नानी ने नूर के साथ खूब मजे किये। उसके लिये कपड़े और स्वेटर बनाये, उसके साथ लोदी गार्डन घूमने गई, उसे कहानियां सुनाई, अजीब-अजीब नाम दिये। घर में चार पीढ़ियां देख कर दिल खुश होता था। प्रिमिला जी, बिंदिया, माओ और नूर।



2012 में मस्तिष्क की सर्जरी के दौरान किसी को पता नहीं था कि बिंदिया नूर के आने का इन्तज़ार कर पायेगी या नहीं। सब बहुत खुश थे जब बिंदिया स्वस्थ हुई, नानी बनी और नानी होने का पूरा आनन्द लिया। जिंदगी कैसे जीनी चाहिये बिंदिया ने हम सब को दिखाया और सिखाया। मगर अब बिंदिया थक गई थी। वो अब और दर्द सह कर नहीं जीना चाहती थी। उसने तय कर लिया और सब को कह भी दिया था कि अब (अगर) कैंसर वापिस आया तो वो कोई सर्जरी नहीं कराएगी। जिंदगी को लम्बा करने के लिये और तकलीफ नहीं सहेगी। अब बिंदिया अपने अगले सफ़र के लिये तैयार थी और उसने परिवार और दोस्तों को भी तैयार करने की कोशिश की।

2013 के आखिरी महीनों में फिर से काफ़ी स्वस्थ थी बिंदिया। फिर से चित्रांकन करना चाहती थी। उसने मुझे से कहा चलो कुछ करते हैं। मैं तो हमेशा उसके साथ काम करने को तैयार रहती थी, सो मैंने कहा “चलो दिलदार चलो, मिलकर कुछ और काम कर लो”। मगर, इन इरादों के कुछ ही दिनों बाद कैंसर फिर से मस्तिष्क में सक्रिय हो गया। डॉक्टरों ने भी वही कहा जो बिंदिया चाहती थी, यानी अब और कुछ नहीं किया जा सकता। कुछ ही हफ़्तों

में बिंदिया की प्रतिक्रियायें कम हो गईं। धीरे-धीरे उस का पहचानना, मुस्कुराना, बात करना, इशारे करना बन्द हो गया। नाक में लगी ट्यूब से उसे तरल खाना दिया जाने लगा। सुकून इस बात का था कि बिंदिया को दर्द, या तकलीफ़ महसूस नहीं हो रही थी। उसे घर ले आये और कोशिश की कि वो तकलीफ़ न पाये, उसकी गरिमा बनी रहे। उसे इस हालत में देखना सरल नहीं था। चार महिला सहायक, माओ और अमित, बिंदिया की बहुत प्यार से अन्त समय तक देख देख करते रहे। बिंदिया को हमेशा लेटे देख कर नूर ज़रूर बौखलाती रही। वो बिंदिया के कमरे में जाती थी। नानी-नानी कह कर आवाज़ देती थी, मगर कोई जवाब नहीं। बहुत हैरान हो जाती थी दो बरस की नूर इस ख़ामोशी पर।

18 अप्रैल रात 8:50 पर हमारी बिंदिया ने अन्तिम सांस ली। दस मिनट के बाद माओ ने मुझे फ़ोन किया और कुछ ही देर में मैं बिंदिया के घर, उसके पास थी। 19 अप्रैल की सुबह ब्यारह बजे सैकड़ों प्रियजनों की मौजूदगी में बेटी माओ और दामाद अमित ने बिंदिया का अन्तिम संस्कार किया। पहली मई, मज़दूर दिवस की शाम को बिंदिया का परिवार और दोस्त इकट्ठे हुये और उसे संगीतमय श्रद्धांजलि दी। दामाद अमित और मित्र सोनम (कालरा) और उनकी टीम ने संगीत से श्रद्धांजलि दी। बिंदिया की दोस्त अरुनधिति (रॉय) और मैं कुछ बोले। ज़्यादा





समय संगीतमय स्वामोक्षी थी और यही हम सब चाहते थे।

अपना शरीर त्याग कर बिंदिया अब अपने चाहने वालों के दिलों में बसती है। उसकी यादों के चित्रण जगमगा रहे हैं। बिंदिया की कृतियां भी हमारे साथ हैं और रहेंगी। अब शरीर के बन्धन नहीं हैं। दिल में तस्वीर है उस की। जब जी चाहा गर्दन झुकाई देख ली!!

कैंसर से इतना जूझने के बावजूद भी बिंदिया ने शायद ही कभी कहा हो जो अकसर लोग कहते हैं “मैं कैंसर से लड़ रही हूँ। या कैंसर और मेरे बीच युद्ध चल रहा है।” “जो मिल गया उसी को मुकद्दर समझकर” बिंदिया अपना इलाज करवाती रही और जब लगा कि अब ये शरीर ठीक नहीं हो सकता तो हमारी दोस्त अपने नश्वर शरीर को त्याग कर आगे चल पड़ी। बिंदिया के जीने के तरीकों ने बहुत सिखाया है हम सबको।

बिंदिया की जादुई चित्रकारी

दिल्ली वासी थी/ है बिंदिया। उसके पिता ट्रेड यूनियन के माध्यम से मजदूरों के अधिकारों की रक्षा का काम करते थे। मां प्रिमिला लूम्बा अध्यापक रहीं, ‘स्प्रिंगडेल स्कूल’ के बोर्ड पर आज भी हैं और ‘नेशनल

फेडरेशन ऑफ इन्डियन विमेन’ नामक एक बड़ी महिला संस्था की सक्रिय सदस्य व कार्यकर्ता, आज 75 वर्ष की उम्र में भी हैं। बिंदिया ने ‘दिल्ली पब्लिक स्कूल’ में पढ़ने के बाद ‘दिल्ली स्कूल ऑफ आर्टिस्टिक एंड प्लानिंग’ से शिल्पकला में डिग्री हासिल की थी। कुछ दोस्तों को मकान बनाने में सलाह दी। कई साल आंशिक रूप (पार्ट-टाइम) से अपने ही स्कूल में पढ़ाया भी मगर ज्यादा काम बिंदिया ने किताबों, पोस्टर आदि के रूपकार, चित्रकार, सज्जाकार के रूप में किया। बच्चों की बहुत सारी किताबों के लिये चित्र बनाये। अपनी बीमारी के दौरान बिंदिया ने जस्टिस लीला सेठ जी की बच्चों के लिये लिखी *We, The Children of India* किताब को सुसज्जित किया। यह किताब *Penguin India* ने छपी है। *Puffin* के लिये बिंदिया ने एक बहुत ही मजेदार किताब बनाई है *Curiosity Killed the Cat and other Animal IDIOMS* कथा के लिये बिंदिया ने गीता धर्मराजन की पुस्तक *The Magic Raindrop* और सारेण देव मूर्ती की लिखी पुस्तक *The Runaway Puppy* सजाई। इसी प्रकार पंकज बिश्त द्वारा लिखी *Bholu and Golu* और कल्पना स्वामीनाथन द्वारा लिखित पुस्तक *The True Adventures of Prince Teentang* को सुसज्जित किया। तूलिका पब्लिशर्स के लिये बिंदिया ने दो किताबें बनाई—एक है हिन्दी शब्दमाला सिखाने के लिये “क से कपड़े कैसे” और दूसरी मेरी लिखी पुस्तक “मालू भालू”। मालू-भालू एक छोटी सी भालू और उसकी मां की हिम्मत पर लिखी एक लम्बी कविता है। तूलिका ने मेरी हिन्दी में लिखी किताब को पांच और भाषाओं में भी अनुवाद करके छपा है— इंग्लिश, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम।

बिंदिया बच्चों की किताबों में तो जान डाल देती है। इन्सान, पेड़-पौधे, जानवर, चिड़िया हिलते-डुलते, चलते-फिरते, उड़ते से नजर आते हैं। बिंदिया के बनाये फूलों में खुशबू सी होती है। उसकी सारी किताबें जीवन्त और मस्ती भरी हैं। उनमें जादू है, आनन्द है और शायद इसीलिये बच्चे उन्हें बहुत पसन्द करते हैं। तुम्हारी और तुम्हारी कृतिओं की जय जयकार है बिंदिया। ये किताबें बच्चों को खुश करती रहेंगी और उनके जीवन में मस्ती भरती रहेंगी।

मेरे शब्द और बिंदिया के चित्र: एक लम्बी साझेदारी

बिंदिया ने बहुत लोगों के साथ, बहुत तरह का बहुत काम किया, और बहुत अच्छा काम किया, पर मेरी जानकारी के हिसाब से, बिंदिया और मेरी साझेदारी सब से ज्यादा और लम्बी रही। अपनी दोस्त बिंदिया के साथ अपनी नज़दीकी दिखाने के लिये मैं यह डींग मार रही हूँ। वो एक हिन्दी फिल्म का गाना है न “मेरे सूर और तेरे गीत” उसी तर्ज पर मैं कहना चाहती हूँ “मेरे शब्द और बिंदिया के चित्र।” क्या फिट बैठते हैं दोनों। जब कोई ऐसा विचार आता था जिसे सूरत की ज़रूरत थी मैं बिंदिया को फोन लगाती थी और हमारा काम शुरू हो जाता था। हमारा अपना छोटा सा लघु उद्योग बन गया था। मैं कुछ लिखती थी, बिंदिया चित्र बनाती थी और साज-सज्जा करती थी, ‘सिस्टम्स विज़न’ के विनय आदित्य जी छापते थे और ‘जागोरी’ प्रकाशन और वितरण करती थी। इस लघु उद्योग से महिला आन्दोलन के लिये बहुत कुछ निकला जो शिक्षाप्रद व प्रेरणा और आनन्ददायक है।

अनगिनत दीवारों पर खड़े होकर बोलते हमारे पोस्टर

महिला आन्दोलन के लिये बिंदिया ने और मैंने बहुत सारे और बहुत अच्छे पोस्टर बनाये और लोगों और संस्थाओं ने उन्हें बहुत पसन्द भी किया। महिला साक्षरता पर हमने पोस्टरों का एक सेट बनाया।

- मैं पढ़ना सीख रही हूँ ताकि जिंदगी को पढ़ सकूँ।
- मैं लिखना सीख रही हूँ ताकि अपनी किस्मत खुद लिख सकूँ।
- मैं हिसाब सीख रही हूँ ताकि अपने अधिकारों का भी हिसाब ले सकूँ।

क्या जान डाली है बिंदिया ने इन पोस्टरों में। इसके बाद हमने छः पोस्टरों का एक सेट महिला हिंसा पर बनाया और उसे ‘जागोरी’ की मदद से पूरे देश



और पड़ोसी देशों में पहुंचाया। मेरे एक छंद पर बिंदिया ने एक लाजवाब पोस्टर बनाया—

“मैं सरहद पर बनी दीवार नहीं, मैं तो उस दीवार पर पड़ी दरार हूँ।”

मेरी कविता “क्योंकि मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है” पर हमने एक बड़ा पोस्टर बनाया। एक प्रभावशाली पोस्टर हमने मानव अधिकारों पर बनाया। और भी कई पोस्टर बनाये हमने और ये देश के कई कोनों में काम करती छोटी-बड़ी संस्थाओं में दिख जाते हैं। हर नई कृति पर बिंदिया और मैं उत्तेजित हो जाते थे। इन कृतियों से हमारे अन्दर ऊर्जा का संचार सा हो जाता था। हमारी रंगों में खून दौड़ने लगता था।

चूँकि मैं दक्षिण एशिया के स्तर पर काम करती हूँ और भारत पाक दोस्ती के अभियानों से जुड़ी हुई हूँ, हमारे कई पोस्टर हमने तीन भाषाओं में बनाये, हिन्दी, उर्दू और इंग्लिश। इस के कारण ये पोस्टर दक्षिण एशिया में हमारे हमारे पड़ोसी देशों में भी पहुंचे।

डिज़ाइनर बैनर : एक नई शुरूआत

हर अभियान और मोर्चे के लिये हमें बैनरों की ज़रूरत होती है। पहले हम सफेद कपड़े पर काले से लिखकर काम चला लेते थे। पर जब डिज़ाइनर बिंदिया मेरे साथ थी तो मेरी ख्वाहिशें बढ़ने लगी। मैंने हर विषय पर नारे लिखे और

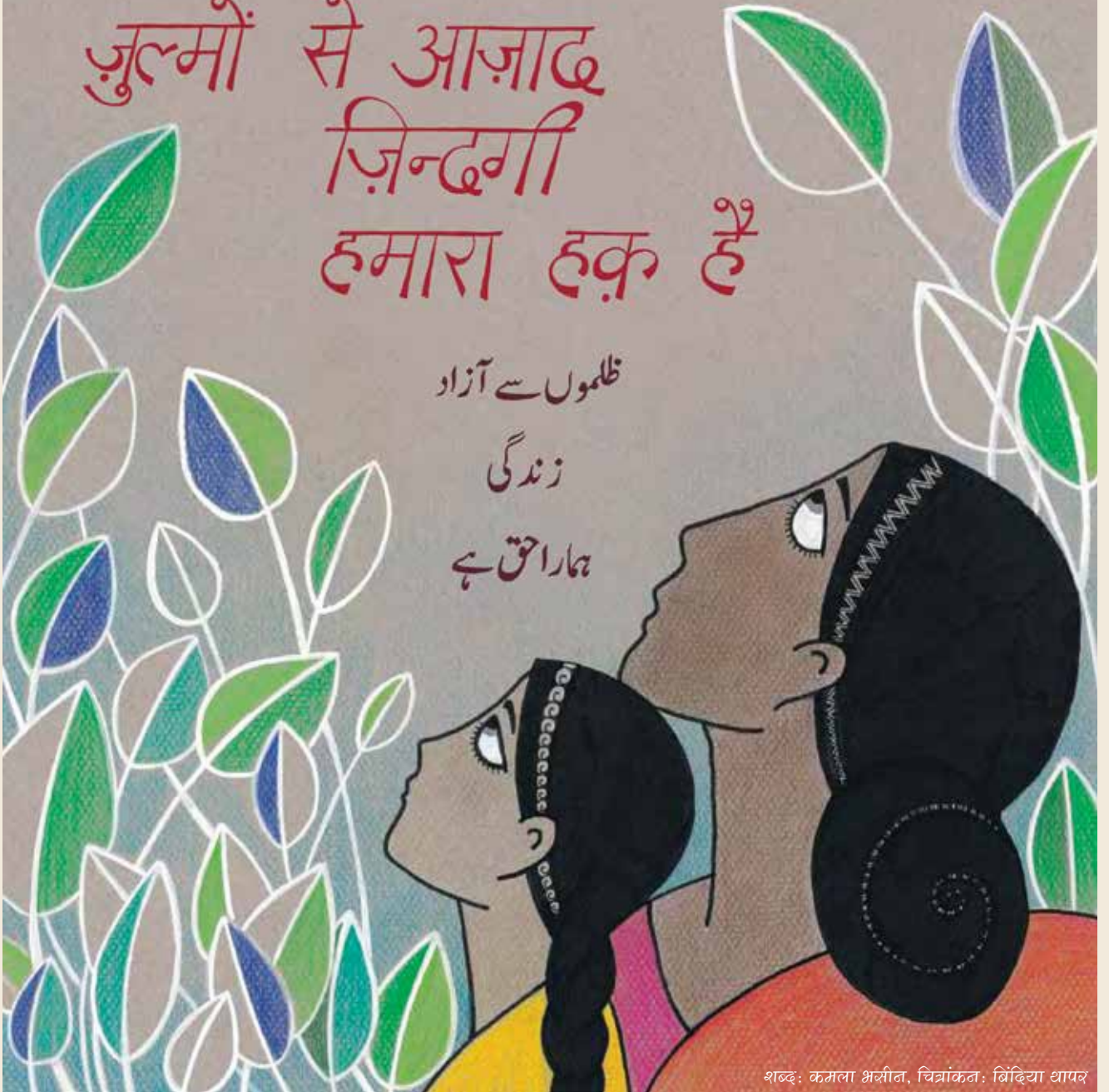
बिंदिया ने उन के बैनर डिज़ाइन किये। ये बैनर हिन्दी, इंग्लिश और कुछ उर्दू में भी हैं। हमारे हर अभियान और प्रशिक्षण में ये बैनर खड़े-खड़े संदेश देते रहते हैं। हमारा दक्षिण एशियाई नारीवादी संजाल (नेटवर्क) ‘संगत’, हर जगह इन बैनरों का इस्तेमाल करता है। बहुत सी साथी संस्थाओं को हमने इन बैनरों के सेट बनाकर दिये हैं। अब ये बैनर सजावट भी करते हैं और हमारे संदेश भी पहुंचाते हैं। पिछले एक दो साल से जब से बिंदिया काम नहीं कर पा रही थी मुझे ऐसा



A LIFE
FREE FROM VIOLENCE
IS OUR RIGHT

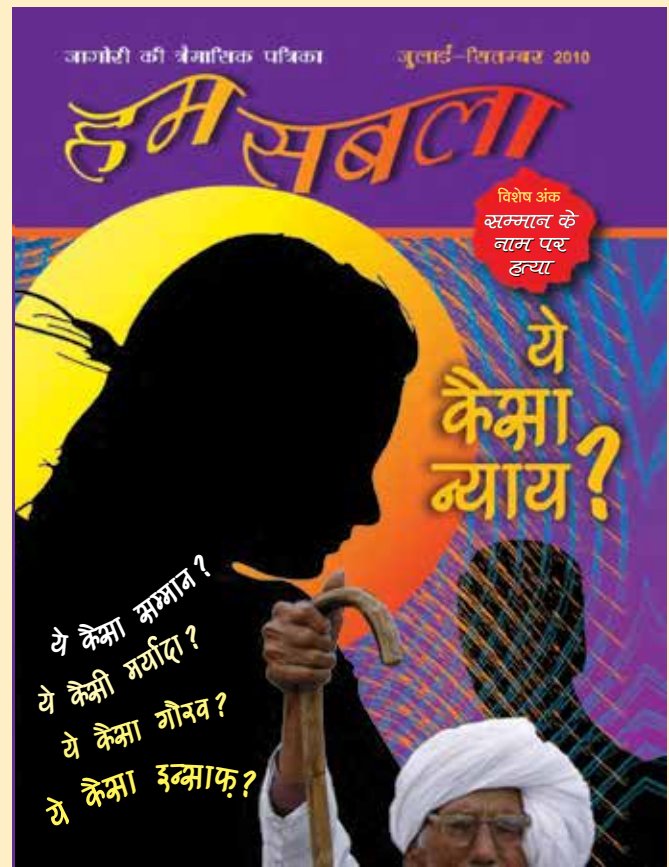
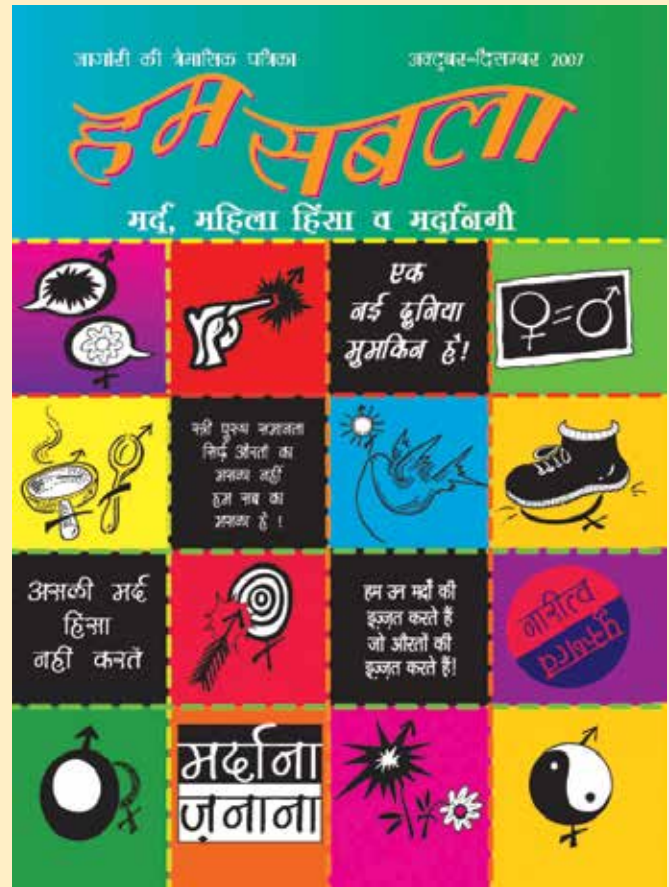
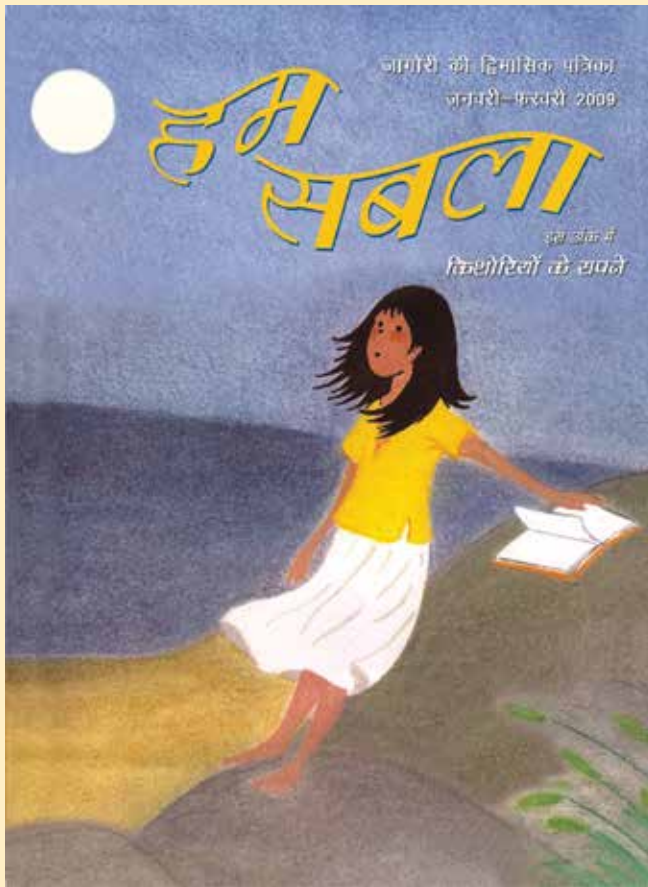
जुल्मों से आज़ाद
ज़िन्दगी
हमारा हक़ है

ظلموں سے آزاد
زندگی
ہمارا حق ہے



लड़की क्या है ?
लड़का क्या है ?





रडस नहीँ हीँता सिर्फ़ औँरीं की
यह हीँ सकता हैँ हमें औँरीं हमारीं की !



औँरीं केँ मन की कर देखीँ...
... अब अपने मन की करनी हैँ !

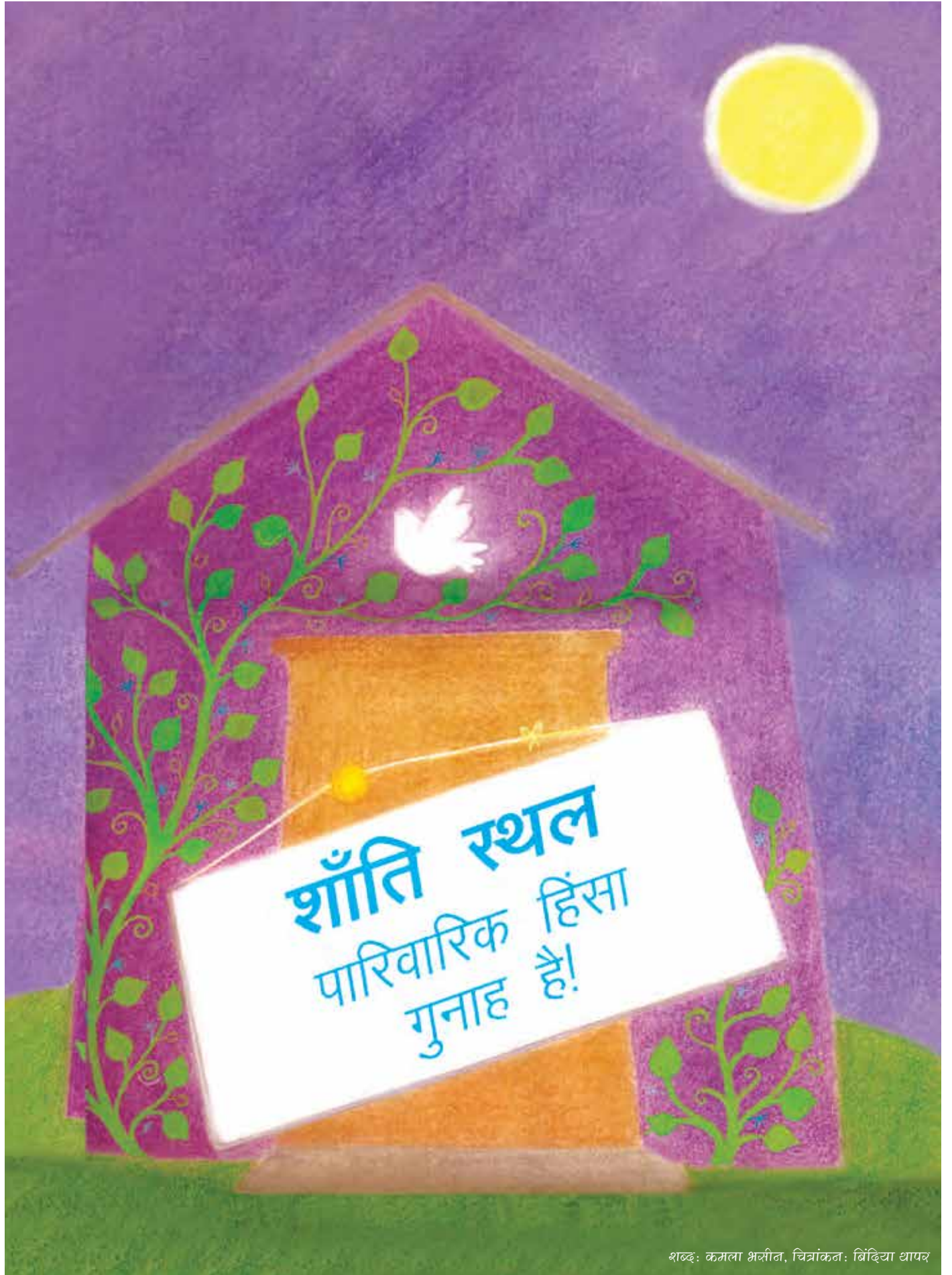


प्यार केँ सच्ये रिश्ते
हैंँ जैसेँ फ़रिश्ते !

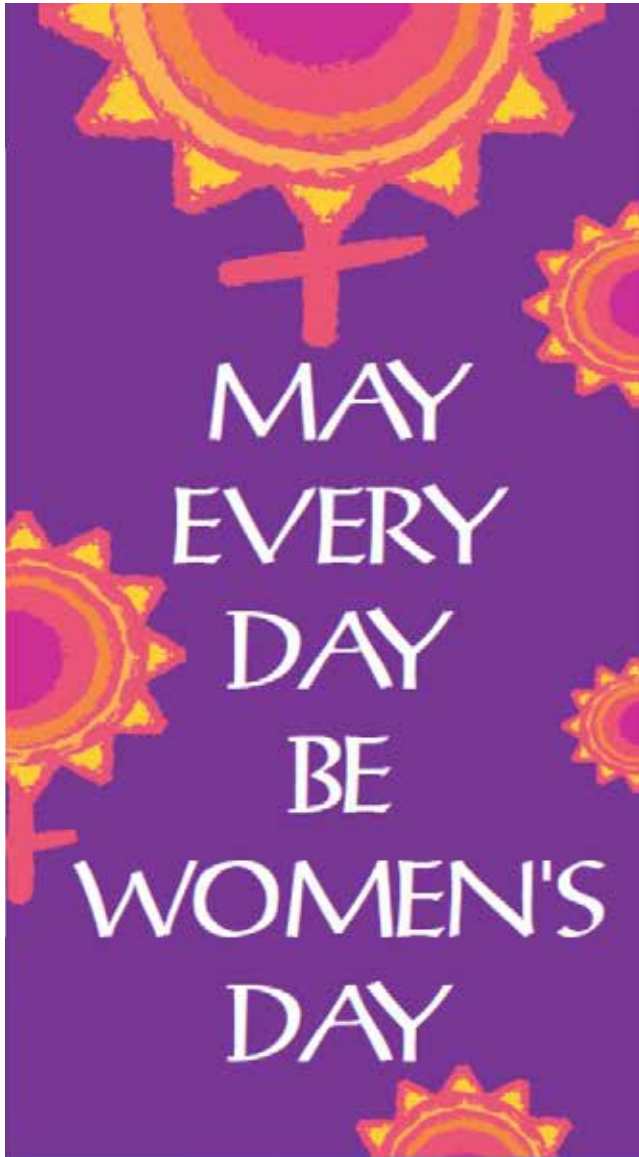


औँरत केँ शरीर पर
औँरत का अधिकार !











घरों में हो रहे
ज़ुल्मों पर
खामोशी अब और नहीं

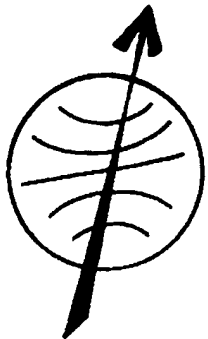


लगता रहा है जैसे मैं आधी रह गई हूँ। बिंदिया की चित्रकारी के बिना मेरी शब्दकारी अकेली पड़ गई है। अब पहले जैसे जोश और संख्या में विचारों की उपज नहीं हो रही। चित्रकार और भी हैं पर हमारी बिंदिया का है अन्दाजे बयां और। जैसे ग़ालिब अपने जैसे एक हैं, वैसे मेरे लिये बिंदिया भी एक है, अनुपम या बेनज़ीर, जिसका सानी नहीं।

बिंदिया ने जागोरी की 'सबला' को आकर्षक बनाया

बिंदिया के जोश, फुर्ती और उसके चित्रों की अभिव्यक्ति के कारण और उसके साथ काम करने में जो आनन्द आता था उसके कारण मेरी डिज़ाइन की हर ज़रूरत का जवाब थी बिंदिया। मेरी एक मित्र शारदा जैन जो दिल्ली के एक महिला कॉलेज की प्रिन्सिपल थी लड़कियों और महिलाओं के लिये एक पत्रिका निकालना चाहती थीं। अरसी के दशक की बात है। शारदा जी मेरे पास आई और हमने मिलकर 'सबला' निकालना शुरू किया। कुछ वर्षों के बाद अपनी बढ़ती उम्र के कारण शारदा जी 'सबला' के प्रकाशन की जिम्मेदारी नहीं उठा पा रही थीं और वे चाहती थीं कोई और संस्था 'सबला' का प्रकाशन करे।

मैंने 'जागोरी' के मित्रों के सामने ये प्रस्ताव रखा और 'जागोरी' ने खुशी से 'सबला' को अपना लिया। तब जुही जैन मेरे साथ यूएन में काम करती थीं। उन्हें भी लिखने का शौक है। मेरे साथ काम करने से पहले वे 'जागोरी' में थीं। पिछले कुछ वर्षों से 'जागोरी' ने जुही को 'सबला' के सम्पादन की जिम्मेदारी दे रखी है। बिंदिया बरसों 'सबला' की साज-सज्जा में 'जागोरी' की मदद करती रही। 'सबला' के लगभग सभी अंकों में बिंदिया का योगदान रहा है और 'हम सबला' के सब पाठक बिंदिया की कृतियों को देखते आये हैं। 'सबला' अब 'हम सबला' कहलाती है।



बिंदिया के साथ बनाई पुस्तकें

मेरी कई पुस्तकों की साज-सज्जा और उन्हें मुखर बनाने के लिये बिंदिया और मैंने बरसों मिलकर काम किया। जैसे मैं पहले बता चुकी हूँ, हमारी पहली किताब जिसे बिंदिया

ने अपने चित्रों से संजोया और रूप दिया वह थी "हमारी बेटियां इन्साफ़ की तलाश में।" एक और जिसका जिक्र हो चुका है वह है "मालू भालू" जिसका एक-एक चित्र अपने आप में एक पेन्टिंग है। जेन्डर की अवधारणा को बहुत ही सरल भाषा और तरीके से समझाने के लिये मैंने एक छोटी सी किताब लिखी— "लड़की क्या है? लड़का क्या है?" यह पूरी किताब दो भाषाओं में है— हिन्दी और इंग्लिश। बिंदिया के तस्वीरों के जादू ने इस किताब में जान फूंक दी। नारीवादी समूहों ने 15-20 देशों में अपनी-अपनी भाषाओं में इस का अनुवाद किया है और छपा है।



जेन्डर पर इस किताब को देख कर UNESCO ने मुझे उसी तरह की सरल भाषा में HIV/AIDS और युवाओं पर एक किताब लिखने को कहा। मैंने कहा मैं HIV/AIDS के बारे में ज़्यादा नहीं जानती। उन्होंने कहा HIV/AIDS की जानकारी तो वे मुझे दे देंगे। मुझे तो बस अपने ढंग से वह किताब लिखनी है ताकि युवा उसे पढ़ें और HIV/AIDS की महामारी की चुनौती का मुकाबला करें। मैंने कहा अगर UNESCO बिंदिया से इस पुस्तक की रूप सज्जा करवायेंगे तो मैं लिख दूंगी। वे मान गये और इस किताब पर काम शुरू हुआ। मैंने कहा मैं पहले इस किताब को हिन्दी/उर्दू में लिखूंगी ताकि कुछ शोध-शायरी भी हो सके। अब मैं फिर उँग मारूंगी और कहूंगी कि बिंदिया और मेरी साझेदारी से बनी यह पुस्तक अपने आप में अनूठी है। HIV/AIDS पर लिखी ज़्यादातर पुस्तकें जो हमने देखी थीं वे इतनी उरावनी थीं कि शायद ही कोई युवा उसे पढ़े। हमारी किताब है एकदम रंगीन, मजेदार। उसमें खूब कवितायें और नारे भी हैं। हर अध्याय का शीर्षक पद्य में है। इस किताब का शीर्षक है 'चलो ख़तरे को वरदान बनायें'। इंग्लिश में इस का शीर्षक है *LET US TURN THIS DANGER INTO AN OPPORTUNITY* यौन और यौनिकता को सरल रूप में, साफ़ साफ़ समझाया है, कॉन्डोम आदि पर खुल कर बात की है। मज़ाक-मज़ाक में वो बातें की हैं जो अकसर नहीं



की जातीं और उस खामोशी से सब को नुकसान होता है। एक-दो नमूने पेश हैं हमारी शायरी के—

“टोपी कह लो थैली कह लो,
कॉन्डोम इज़ ए जौली गुड फ़ैलो”

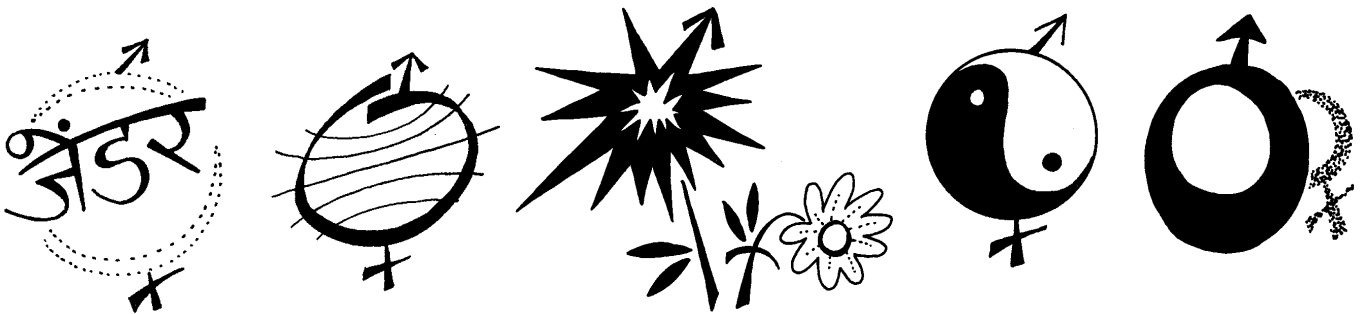
“गर साथी आवाज़ है तो कॉन्डोम ही सहारा है”

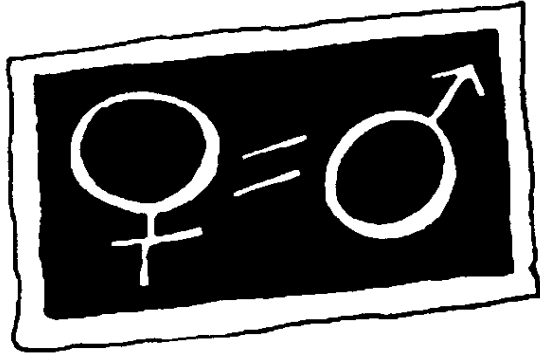
मैं बता नहीं सकती बिंदिया को और मुझे इस किताब को बनाने में कितना मज़ा आया। इस किताब को बार बार टेस्ट करने के लिये, यह देखने के लिये कि युवाओं को ये समझ में आयेगी या नहीं, पसन्द आयेगी कि नहीं, हमने अपनी बेटियों का इस्तेमाल किया। मीतो और माओ ने कई बार इस किताब के मसौदे को पढ़ा और हमें अपने युवा सुझाव दिये। इस किताब की सब से बड़ी खासियत है कि बिंदिया ने इस पूरी किताब को हाथ से लिखा है। जी हां, हाथ से किताबत की है। बताइये है जवाब इस कलाकार का? उसके चमत्कार का? मेहनत करने की उसकी क्षमता का? मैं वारी जाती हूँ उस पर।

हिन्दी में यह किताब UNESCO और NACO ने छपी थी। हिन्दी में छपने और लोगों को पसन्द आने के बाद, दक्षिण एशिया के लिये हमने यह किताब इंग्लिश में की और इसे UNICEF ने छपा। आज यह किताब दक्षिण एशिया की कई भाषाओं में है।

हंसने का इन्तज़ाम- LAUGHING MATTERS

मुझे हंसना बहुत पसन्द है, इसलिये मुझे चुटकले पढ़ने, सुनने और सुनाने में बहुत मज़ा आता है। कई सालों से मैं नारीवादी चुटकुले इकट्ठे कर रही थी। मुझे याद है 1985 के दशक में मैं स्वीडन में थी। वहां पर मैंने नारीवादी चुटकुलों और कार्टूनों की एक किताब देखी जो स्कैन्डीनेवियन सरकारों के एक क्षेत्रीय महकमे ने छपी थी। मैं बहुत हैरान और खुश थी यह देखकर कि वहां की सरकारें नारीवादी चुटकुलों को सिर्फ़ बर्दाश्त ही नहीं करतीं, उनकी किताब बनाकर उसे छापती भी हैं। वो किताब स्वीडिश में थी। मेरी दोस्त EVA WARBERG के साथ पूरी रात बैठकर मैंने वो सारे चुटकुले सुने, और जो मुझे पसन्द आये उनका अनुवाद किया। चूंकि मेरी बेटी मीतो को मेरे JOKER होने का पता था, वह भी मेरे लिये मज़ाकिया पोस्टकार्ड, कार्टून लाती रहती थी। मैं खुद भी चुटकुले इकट्ठे करती थी। खुद बनाती भी रहती थी। तब तक मैंने दक्षिण एशिया में कोई नारीवादी चुटकुलों की किताब नहीं देखी थी, न ही हमारे प्रकाशनों में चुटकुले पड़े थे। हमारे नारीवादी आन्दोलन में मज़ाक के इस अकाल को खत्म करने की इच्छा थी मेरी। मुझे यकीन था कि पितृसत्ता को ध्वंस करने का हमारा सफ़र बिना हंसी-मज़ाक, मौज-मस्ती के नहीं कट सकता। मेरे बिंदिया पूर्व जीवन में मैं कई कार्टून बनाने वालों को आजमा चुकी थी। कोई रास नहीं आया। चूंकि बिंदिया भी कम जोकर नहीं थी, मैंने उस से पूछा 'करें हंसी का इन्तज़ाम', मुझे यकीन था वह हां के





अलावा कुछ नहीं कह पायेगी। हंसते-हंसते यह किताब बन गई। 'जागोरी' के बीसवें जन्म दिन पर इसका विमोचन हुआ, यानी 2004 में।

2012 में बिंदिया ने और मैंने हिन्दी में एक जोक-बुक निकाली जिस का शीर्षक है 'हंसना तो संघर्षों में भी जरूरी है'। यह लगभग आधी किताब अंग्रेजी वाली जैसी है और आधी नई है। इस में मेरी कई मजाकिया और व्यंगात्मक कवितायें भी हैं। मेरी जानकारी के हिसाब से नारीवादी मजाक की दक्षिण एशिया में ये पहली पुस्तकें हैं।

बाल सौन-शोषण पर लिखी मेरी हिन्दी और इंग्लिश की छोटी किताब "काश मुझे किसी ने बताया होता" व *If Only Someone Had Broken The Silence* भी बिंदिया ने चित्रित की है। यह किताब बचपन के मेरे अपने अनुभवों पर आधारित है। बिंदिया ने इस किताब को भी बहुत संजीदगी से बनाया है। इस किताब का अनुवाद भी कई देशों की भाषाओं में हुआ है।

'जागोरी' और 'Kali For Women' ने हिन्दी और इंग्लिश में मेरी चार-चार किताबें छपी थीं "पितृसत्ता क्या है"? "भला ये जेन्डर क्या है"? "नारीवाद: यह आखिर है क्या"? और "मर्द, मर्दानगी और मर्दवाद"। पहले ये पुस्तकें बिना चित्रों के छपती रहीं। बिंदिया के साथ काम करने और उसके चित्रों के जादू के असर को समझने के बाद हमने इन आठ में से छः किताबों को बिंदिया से डिजाइन करवा के कुछ और रोचक बनवाया। ये सब किताबें बहुत से प्रशिक्षणों में पढ़ाई जाती हैं। इनका भी अनुवाद 20-25 भाषाओं में हो चुका है जिनमें अरबी, तुर्की, दरी, वियतनामी, भी शामिल हैं। जब नारीवादी संस्थायें या स्वयंसेवी संस्थायें मेरी किताबों अनुवाद और प्रकाशन की इजाजत मांगते हैं तो मेरी सिर्फ एक शर्त होती है कि बिंदिया का डिजाइन और चित्र नहीं बदले

जा सकते। ऐसा इसलिए क्योंकि मेरा मानना है कि बिंदिया के चित्रों को बेहतर नहीं बनाया जा सकता।

हमारी एक किताब के जरिये बिंदिया और रिमंतु का मिलन

जब 11 सितम्बर 2001 को न्यूयार्क में दो इमारतों पर हमला हुआ था तो मैं अपने काम के लिये काठमांडू में थी। राष्ट्रपति बुश के नेतृत्व में अमरीकी प्रतिक्रिया हिंसात्मक नज़र आ रही थी। वे इन दो इमारतों पर आतंकवादी हमले का जवाब पूरे देश पर हमला करके देना चाहते थे। उन लोगों को सज़ा देना चाहते थे जिन का इन आतंकियों से कोई रिश्ता नहीं था। यह अमरीकी हमला हमारे पड़ोसी देश अफ़गानिस्तान पर होने की बात हो रही थी। इस युद्ध की आशंका ने सब अमन पसन्दों को विचलित कर दिया था। जगह-जगह इस युद्ध के इरादों का विरोध किया जा रहा था लेखन, वक्तव्यों और मोर्चों के जरिये। मैंने नेपाल से लौटते ही 14 सितम्बर 2001 को अपने तमाम दोस्तों के साथ इन्डिया गेट पर एक अमन जुलूस का आयोजन किया जिसका संदेश था आतंक का जवाब और बड़ा आतंक नहीं होना चाहिये। मेरे पुराने मित्र रिमंतु (कोठारी) भी इस जुलूस में शामिल हुये थे।

इस जुलूस के दूसरे दिन रिमंतु एक सुझाव ले कर मेरे घर आये। वे चाहते थे कि वे और मैं मिलकर जल्दी से इस युद्ध की आशंका के खिलाफ़ लिखे जाने वाले लेखों कविताओं और कार्टूनों को इकट्ठा करें और एक किताब के रूप में इंग्लिश, हिन्दी और उर्दू में छापें। उनके एक मित्र इन पुस्तकों के प्रकाशन व वितरण के लिये भी तैयार थे। मैं तुरन्त इस नेक काम के लिये राजी हो गई। हमारा इरादा था तीस दिन के अन्दर कम से कम इंग्लिश वाली पुस्तक का प्रकाशन। हम तेज़ गति से इस हम काम में जुड़ गये। हमें लगा कि इस पुस्तक को प्रभावशाली और मन को छूने वाली बनाने के लिये इस में कुछ फोटो, स्कैच, आदि होने चाहियें। मैंने डिजाइनर के लिये





में सरहदों के पार दोस्ती और साझेदारी बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। इसके लिये हमने दो बैठकों की, एक अमृतसर में और एक लाहौर में। सब लेखों का सम्पादन कर के 2010 में एक मोटी किताब छपी *Bridging*

Partition : People's Initiatives for Peace Between India and Pakistan इस किताब का मुख्य पृष्ठ बिंदिया ने बनाया व *Orient Blackswan* ने इस का प्रकाशन किया।

इट बिंदिया का नाम सुझाया और अगले दिन से हमारा तिगडडा काम करने लगा। हमारी तमाम बैठकों मेरे घर पर होती थीं। इस से पहले रिमंतु और बिंदिया एक दूसरे को नहीं जानते थे। कुछ ही दिनों में मैंने देखा कि उनकी नई नई दोस्ती मोहब्बत में बदलने लगी। मैं खुश थी। नई किताब के साथ-साथ एक नया रिश्ता भी पनपने लगा था। 29 दिनों के अन्दर हमारी अंग्रेजी वाली किताब छप कर तैयार थी। उसका नाम है, *Voices of Sanity : Reaching out for Peace*. कुछ दिनों के बाद हिन्दी और उर्दू में भी ये पुस्तकें तैयार हो गईं। कुछ समय बाद इटली के एक प्रकाशन ने इसे इतालवी भाषा में छपा। युद्ध के खिलाफ पूरी दुनिया में आवाजें उठीं मगर अमरीका ने युद्ध किया और अफगानिस्तान व हमारा पूरा क्षेत्र उसके घातक नुकसान झेल रहा है और झेलता रहेगा।

कुछ समय बाद से बिंदिया और रिमंतु ने बिंदिया के घर में इकट्ठे रहना शुरू कर दिया और 2006 में उन्होंने शादी की। रजिस्ट्रार को घर पर बुलाया और चन्द रिश्तेदारों और नजदीकी दोस्तों की मौजूदगी में विवाह सम्पन्न हुआ। गवाहों में एक मैं भी थी।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में अमन और दोस्ती लाने की कोशिशों का लेखा जोखा

रिमंतु, बिंदिया और मैंने तीन पाकिस्तानी मित्रों-ज़िया मियां, ए.एच. नय्यर और मोहम्मद तहसीन के साथ मिल कर एक और पहल की। हमारे दो देशों के बीच सम्पर्क, समझ, दोस्ती, सहयोग बढ़ाने के लिये बंटवारे के बाद की गईं सब कोशिशों का जायज़ा ले कर उन के बारे में लिखना और उसके ज़रिये इन कोशिशों को और मज़बूत बनाना। हमने दोनों मुल्कों में उन लोगों को सम्पर्क किया जो अलग-अलग क्षेत्रों

रिमंतु के साथ मिल कर बिंदिया ने भारत के जन आंदोलनों के बारे में दो कैलेन्डर बनाये। बिंदिया ने कई नारीवादी व अन्य आन्दोलनों से जुड़ी पुस्तकों के मुख्य पृष्ठ डिज़ाइन किये। पूना स्थित 'कल्पवृक्ष संस्था' के लिये पर्यावरण पर डिज़ाइन बनाये। प्राकृतिक अनेकता पर निहायत खूबसूरत दो पोस्टर भी बनाये थे। 'जागोरी ग्रामीण' 'मीतो मेमोरियल अवार्ड' और जयपुर में काम कर रही 'उमंग संस्था' के *Logo* भी बनाये। बिंदिया दरियादिली से अपना हुनर बांटती और काम में लेती थी। उसे लोगों की मदद करने में मज़ा आता था।

यहां मैं बिंदिया के सिर्फ उस योगदान के बारे में लिख पाई हूं जिनके बारे में मुझे पता है। मैं जानती हूं कि इस सब के अलावा भी बिंदिया ने बहुत कुछ किया था। बिंदिया की ये कृतियां आने वाली पीढ़ियों को उस की याद दिलाती रहेंगी। हमारे शरीर नश्वर हैं, मगर हमारे नेक काम ज़िन्दा रहते हैं।

बिंदिया की बहुआयामी दस्तकारी और कलाकारी

बिंदिया सिर्फ चित्र नहीं बनाती थी। वो और बहुत कलाओं में दक्ष थी। क्या खाना बनाती थी, हमारी दोस्त। उसका बनाया भोजन सिर्फ पेट भरने या स्वाद के लिये नहीं होता था। खाने के रंग, उसे पेश करने का तरीका और खुशबू भी खूब होती थी। जब भी बिंदिया का बना खाना खाती थी, मैं कहती थी "चार बिंदिया, बहुत हाई क्वालिटी खाना खाते हो आप लोग"। उस घर में सबको खाना बनाने और खाने का शौक था/है। बिंदिया, माओ, रिमंतु, अमित सब अच्छा खाना बनाते हैं। एक बार

मेरा बेटा छोटू या जीत जो पूरी तरह से विकलांग है, बहुत बीमार हो गया। उसका हीमोग्लोबिन 4 हो गया था। बिंदिया रोज़ उसके लिये कलेजी और काले चने बनाकर लाती। छोटू का खून बढ़ाती और हमारा हाँसला बढ़ाती। कढ़ाई करने, कपड़े सीने और बुनाई में श्री माहिर थी बिंदिया। इन दस्तकारियों में श्री वो कलाकारी घोलती थी। बिंदिया हर चीज़ में सौन्दर्य ढूँढती और पैदा करती थी। इन कामों से उसे सुकून मिलता था। मुझे याद है केरल के उस प्राकृतिक चिकित्सालय में श्री वो कुछ न कुछ सीती रहती थी।

बिंदिया की सब से बड़ी कला-जीने की कला

बिंदिया और मैंने एक दूसरे को बहुत नज़दीक से देखा और जाना। सुख-दुख दोनों में देखा। दुखों में एक दूसरे का साथ देने की कोशिश की। जब हम मिले थे उस के कुछ समय बाद वह अपने पहले साथी राजीव से तलाक़ लेने की प्रक्रिया में थी। बहुत कठिन समय था उस के लिये। तब मैं उसे जानती थी पर हमारी करीबी नहीं थी। बहुत धैर्य, हिम्मत और गरिमा के साथ उसने यह समय गुज़ारा। बिंदिया की अम्मा प्रिमिला जी हमेशा उस का साथ देती थीं।

बिंदिया को जिन कृतियों का मैंने ऊपर जिक्र किया है उनमें से बहुत सारी उसने तलाक़ और कैंसर के दौरान की थी। चाहे तलाक़ हो, या कैंसर या रिमिड्यु का अकरमात गुज़र जाना, बिंदिया ने जीना नहीं छोड़ा। उस का काम उसे कमाई के साथ-साथ जीवन देना था, उसकी जिन्दग़ाली को जिन्दग़ा रखना था। कैंसर के साथ बिताये 11 बरसों



में बिंदिया हर साल पांच-छः महीने डॉक्टरों, टैस्टों, अस्पतालों, कीमो, कीमो की पैदा की गई तकलीफ़ों के साथ गुज़ारती और 5-6 महीने ठीक रहती थी। इन महीनों में वो पूरी तरह से जीने की कोशिश करती थी। इसी दौरान बिंदिया रिमिड्यु के साथ अमरीका, अफ़्रीका, इंग्लैण्ड गई। अपने एक परिवार के पास बंगलौर गई। मेरे साथ कलकत्ता, सुन्दरबन, ओड़िसा में चिल्ला लेक गई। वह अपने मित्र प्रदीप किशन के साथ सैर करने जाती थी। अरुनधिति और गोलक के साथ गप्पें मारती थी। अन्धशू, मंजरी, पिया, कीर्ति, व और बहुत से दोस्तों के साथ अड्डे करती थी। वह हर अच्छे लैक्चर, फ़िल्म, नृत्य, संगीत के प्रोग्राम में जाती थी। जिंदगी को कभी ताक में नहीं रखा बिंदिया ने यह कह कर कि कैंसर ठीक होने के बाद जीना शुरू करूंगी।

बिंदिया के हर आयाम, हर पहलू को मेरा सलाम। बिंदिया की दोस्ती, प्यार, और सहारा मेरी जिंदगी के लिये बहुत अहम था और हमेशा रहेगा।

कमला भसीन, नारीवादी लेखिका व कार्यकर्ता हैं।

बतौर 'यादगार' एक दोस्त की कलम से निकले ये अल्फ़ाज़ और इन सफ़ों को सजाने वाले तमाम चित्र, पोस्टर, बैनर, कलाकृतियां जागोरी की सबसे रचनात्मक जोड़ी कमला भसीन व बिंदिया थापर की सृजनात्मक साझेदारी की एक छोटी सी झलक है। कमला के शब्द और बिंदिया के चित्रों की इस प्रेरणादायक विरासत का हम इस्तक़बाल करते हैं।

पृष्ठ 21-39 सभी रेखाचित्र, पोस्टर, बैनर जागोरी द्वारा प्रकाशित पठन सामग्री से लिए गए हैं।
अवधारणा व शब्द: कमला भसीन, चित्रांकन: बिंदिया थापर।